ISSN 2350-1065 MUKTANCHAL
वर्ष : 08, अंक : 30-31, अप्रैल-सितंबर 2021

शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

मुक्तांचल

पीयर रिव्यूड त्रैमासिक

व्यंग्य कल और आज

मूल्य : 100 रुपये

विद्यार्थी मंच

Scanned with OKEN Scanner

शोध समीक्षण सृजन संचार

143 एस. आनंद : आईना ही खराब है प्यारे
145 आशीष दशोत्तर : पथ के पतन की पराकाष्ठा
146 सजल प्रसाद : जनसंख्या नियंत्रण का नुस्खा
149 शिखरचंद जैन : आपदा है तो अवसर है
151 आशुतोष सिंह : कतई न बनें आलोचक
154 अभिजीत दूबे : भैया जी के चश्मे का नंबर
156 रमेश मनोहरा : कुत्ते से पहचान
159 मनोहर सिंह चौहान : कोरोना रैली
160 नवीन कुमार सिंह : कविता और मोटर व्हीकल्स (लघुकथा)
161 पारस कुंज : प्रतिष्ठा (लघुकथा)
161 रामप्रवेश रजक : गँवार कौन? (लघुकथा)

व्यंग्य आज: पद्य

162 सुरेंद्र शर्मा : राम बनने की प्रेरणा
162 ताराचरण खवाड़े : गीत
162 अशोक चक्रधर : दया
163 सदानंद सुमन : मेमनों को है मुगालता
163 रामावतार राही : सुनो 2021
164 गिरिधर राय : एम जी रोड
165 सुरेश शॉ : इंटलेक्चुअल जेंटलमैन
166 वेदप्रकाश मिश्र : प्रश्नकाल
167 सुनील कुमार शर्मा : कुर्सी

साक्षात्कार

168 राजशेखर चौबे : व्यंग्य हिंदी साहित्य का नवोन्मेष है : विनोद साव

पुस्तकायन

172 प्रकाश कुमार अग्रवाल : समसामयिक विसंगतियों का आईना : इक्कीसवीं सदी के 131 श्रेष्ठ व्यंग्यकार
176 मांगन मिश्र 'मार्तंड' : स्तरीय व्यंग्य–संग्रहः हा! वसंत!

Scanned with OKEN Scanner

गुजरात से हिंदी की सम्पूर्ण साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका

ISSN - 2347 - 8764

विश्व गाथा

वर्ष : 8 अक्टूबर-नवंबर-दिसंबर 2021 अंक नंबर : 4

संपादक : पंकज त्रिवेदी

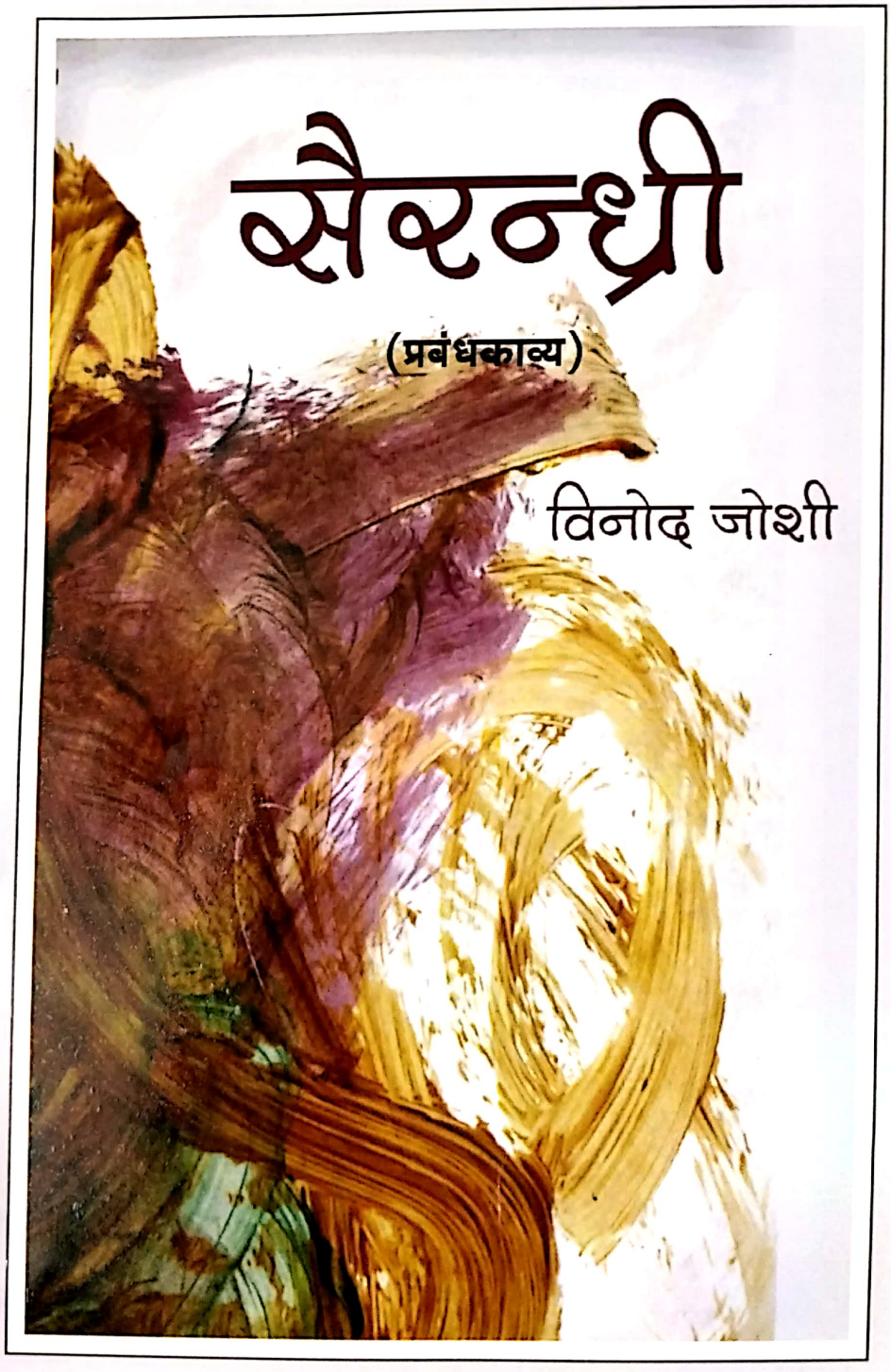

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

अक्तूबर-नवंबर-दिसंबर 2021
वर्ष – 8 ✲ अंक – 4

✲

संपादक
पंकज त्रिवेदी

✲

मार्गदर्शक
बिन्दु भट्ट / सूरज मल रस्तोगी
भावना भट्ट / डॉ संगीता श्रीवास्तव
श्रेणिक शाह

✲

सदस्यता
वार्षिक 300/- रुपये
दो वर्ष 600/- रुपये

✲

सम्पादकीय कार्यालय
विश्वगाथा
ॐ, गोकुलपार्क सोसायटी,
80 फीट रोड, सुरेन्द्रनगर 363002
(गुजरात)

✲

Vishwagatha@gmail. Com
Mo: Calling - 08849012201
Only Whatsapp / Paytm
09662514007

आपके पत्र - 04

संपादकीय : पंकज त्रिवेदी - 07

दीपावली का विशेष उपहार :
विनोद जोशी रचित प्रबंधकाव्य **'सैरन्ध्री'** -09

ग़ज़ल / कविता :
परेश दवे – 59 / संजीव प्रभाकर – 65 / विजय लक्ष्मी हरिद्वार (उत्तराखंड) - 81 / राजेश जैन - 84 / दौलत राम प्रजापति - 88

शख्सियत :
नवीन गौतम - 38 / रामचरन हर्षाना - 40 /

आलेख :
कृष्ण बिहारी पाठक - 42 / पृथ्वी सिंह बैनीवाल बिश्नोई - 45 / बीनू भटनागर - 49 / रीता रानी - 52 / व्यग्र पाण्डे - 55

कहानी :
बकुल दवे - 56 / कल्पना मनोरमा - 60 / डॉ. प्रदीप उपाध्याय - 63 / शैलेन्द्र चौहान - 66 / जमुना बिनी तादर - 70 / गिरिमा घारेखान - 78

लघुकहानी :
नीना सिन्हा – 39 / बिर्ख खडका डुवर्सेली – 41 इन्दिरा तिवारी – 48 /मुकेश पोपली – 51 / सोच : सुजाता कुमारी – 54 / चेतना कपूर - 84 / रश्मि दुबे - 84

कही अनकही :
दीपा मिश्रा "अनुमेहा" - 85

साक्षात्कार :
डॉ. प्रकाश कुमार अग्रवाल - 89

समीक्षा :
चंद्रजीत शर्मा - 91, मुकेश कुमार सिन्हा - 95

झकास : (व्यंग्य)
धर्मपाल महेंद्र जैन - 98

'विश्व गाथा' में सभी साहित्यकारों का स्वागत है। आप अपनी मौलिक रचनाएँ ही भेजें, साथ में अपना चित्र और परिचय भी। रचनाएँ भेजने से पहले, पूर्व अंकों का अवलोकन जरूर करें। प्रकाशित रचनाओं के विचारों का संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक पर होगा। विवादित या अन्य सामग्री चयन अधिकार संपादक का होगा। प्रकाशित रचनाओं पर कोई पारिश्रमिक भुगतान नहीं होगा। **पत्रिका में प्रकाशित सामग्री रचनाकारों के निजी विचार हैं। संपादक मंडल-प्रकाशक का उनसे सहमत होना बिलकुल अनिवार्य नहीं है। यह अवैतनिक और अव्यावसायिक पत्रिका है।**

~✲~

© Editor, Printer & Publisher : Pankajbhai Amrutlal Trivedi , Gokulpark Society, 80 Feet Road, Surendranagar-363002 (Gujarat) Owner by : Pankajbhai Amrutlal Trivedi, Printed at Nidhiresh Printery, 23, Medicare Complex, Nr. A-One Garage, Surendranagar. Published at Gokulpark Society, 80 Feet Road, Surendranagar-363002 (Gujarat) Jurisdiction : Surendranagar (Gujarat)

Scanned with OKEN Scanner

ISSN : 2348 - 2672
जनवरी–नवम्बर 2021
मूल्य 75 रुपए

अंक 36

लहक

साहित्य की वैचारिकी पत्रिका

भगवान सिंह को यह नहीं कहना चाहिए था कि मैं अलीगढ़ वि.वि. की जरूरतों के अनुसार लिखता हूं : प्रदीप सक्सेना

भारत यायावर और इतिहास ♦ जनसंसार का डूब गया सितारा

अनिल जनविजय

♦ उत्तर स्वराज्य : श्रीभगवान सिंह

♦ किस्सा कहानी चोर का : गंभीर सिंह पालनी

क्या साहित्य के अंतर्गत कामक्रीड़ा का अश्लील चित्रण अंबेडकरवादी चेतना का परिचायक है? देवचंद्र भारती प्रखर

Scanned with OKEN Scanner

लहक

कहानी/ लघुकथा :

105. अपने करीबी : जयराम सिंह गौर
106. लघुकथा : कलयुग में धनवंतरी : गिरिजेश सक्सेना
107. वफ़ा साहब : रूपसिंह चन्देल
111. किस्सा कहानी-चोर का : गम्भीर सिंह पालनी
125. सफाई : शेर सिंह
131. लिबास : रोचिका अरुण शर्मा
134. लघुकथा : अल्जाइमर : रूपल उपाध्याय
135. एपीएल : कामेश्वर
138. वल्लभ डोभाल कभी बड़े नामी लेखक हुआ करते थे : श्रीप्रकाश मिश्र
139. सुरक्षित : चितरंजन भारती
142. जीवन संध्या : कविता सिंह
144. महामारी में अश्वघोष : संजीव चंदन
153. एक टुकड़ा प्रेम : दक्षिणेश्वर प्रसाद राय
156. सड़क छाप का एक दिन : सतीश छिम्पा
159. गरीबी का तमाचा : नीलम राणा
160. अमरीक सिंह दीप की लघुकथाएँ
161. महेन्द्र नारायण पंकज की लघुकथाएँ
162. श्यामबाबू शर्मा की लघुकथाएँ
163. हिंदी आलोचना और रचना की उपेक्षा : कुबेर कुमावत
165. क्या साहित्य के अंतर्गत कामक्रीड़ा का अश्लील चित्रण करना आंबेडकरवादी चेतना का परिचायक है ? : देवचंद्र भारती 'प्रखर'
174. जारकर्म समर्थक के बोल : अरुण आजीवक
179. साहित्य के कायदे और फायदे ! : प्रभाकर चतुर्वेदी
180. कथाकार चन्द्रकिशोर जायसवाल एकल लेखक हैं! ... : दीपक कुमार अज्ञात
182. चन्द्रकिशोर जायसवाल का झंडा हिन्दी साहित्य में फहरेगा ही... : कपिलदेव कल्याणी
183. चटाक्...चट...धा!चटाक्...चट...धा!आ...जा...भिड़...जा!आ...जा...भिड़...जा! : सुरेन्द्र शोपण
184. कमला प्रसाद : उनकी आत्मीयता में सहजता थी : त्रिलोक महावर

स्मृति-शेष :

185. 'जनसंसार' का डूब गया सितारा : गीतेश शर्मा का गुजर जाना : विमल वर्मा, सिद्धेश, अरुण माहेश्वरी, राजेंद्र राजन, शंभूनाथ शुक्ल, राजेश त्रिपाठी, जितेंद्र धीर
189. स्वामी वाहिद काज़मी : गंगा-जमनी संस्कृति के प्रतीक साहित्यकार : राकेश भारतीय

समीक्षाएँ :

190. अभावपूर्ण संघर्ष के महारथी : रूपसिंह चन्देल : पंकज साहा
193. कोरोना का सच और प्यार का फ़साना है 'लव इन लॉकडाउन' में : श्यामली
195. डॉ. देवेंद्र दीपक के 'लाइट हाउस' सरीखे निबन्ध : सुधाकर अदीब
196. जर्मन भाषा में अनुवादित हुई भवानी शंकर नियाल की कविता
197. समीक्षा : रंग-बेरंग (डॉ. सुधेश की आत्मकथा) : अनुराग शर्मा
203. 'सरयू से गंगा' : निकट अतीत का सृजनात्मक आख्यान : सूर्यनारायण रणसुभे
208. मानवीय सरोकार एवं व्यापक अनुभव की कहानियाँ : प्रकाश कुमार अग्रवाल
211. 'शत प्रतिशत' : मानवीय गरिमा को समृद्ध करती कहानियाँ : मनोहर अभय
214. फटकार कर सच बोलने की कबीरी परंपरा और डर के खिलाफ डटी कलम के कवि हैं देवेंद्र आर्य : ध्रुवदेव मिश्र पाषाण
215. कवि मोहन सपरा के कविता-संग्रह 'रक्तबीज आदमी है' : पान सिंह
216. महेश कटारे सुगम की लघुकथाएँ
217. शब्दभेदी : विजय स्वर्णकार का प्रथम ग़ज़ल संग्रह 'आप हैं चाँद पर कदम जैसे' : विनोद प्रकाश गुप्ता 'शलभ'
222. 'रोजनामचा' : चन्द्रकान्ता राय
223. दिल और दिमाग से लिखी गईं कविताएँ : अनन्त आलोक
226. साहित्यकार कुमारी छाया की किताब 'एक प्याली चाय' का हुआ विमोचन
227. मानव जाति का भविष्य कविता में है : विनोद शाही
231. श्रीरामचरितमानस के गहरे साधक थे परमानंद पांडेय व रामतवक्या शर्मा : ओमप्रकाश पांडेय
232. हिमकर श्याम की महामृत्युंजयी कविताएँ 'युद्धरत हूँ मैं' : लक्ष्मीकांत मुकुल
235. 'नदी की टूट रही देह की आवाज' : अवधेश कुमार पांडेय
237. प्रेम के सौंदर्य को उजागर करती कविताएँ : शशि शर्मा
239. प्रेरक दलित कहानियाँ : ज्योति पासवान
241. अपनी राह स्वयं बनाता 'रथ के धूल भरे पाँव' : नीरज नीर
238 / 243. साहित्यिक गतिविधियाँ : महेन्द्र नारायण पंकज
244. कला-संस्कृति : राजू बोहरा

व्यंग्य :

245. हास्य-व्यंग्य : कुम्हलांगना : आफ़ताब अहमद
249. पहलवानी दाँव-पेंच में व्यंग्यकारी : धर्मपाल महेंद्र जैन
250. ये भी कोई जीना है : मानेश्वर मनुज
252. 'कंथा' के जीवनीकार श्याम बिहारी श्यामल से लहक की बातचीत

Scanned with OKEN Scanner